SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रायगढ़ नगर के स्थान – नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

राजकुमार टण्डन, व्याख्याता,
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तोयनर,
विकासखंड – बीजापुर, जिला बीजापुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
राजकुमार टण्डन, व्याख्याता,
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तोयनर,
विकासखंड – बीजापुर, जिला बीजापुर,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/05/2020
Revised on : -----
Accepted on : 26/05/2020
Plagiarism : 01% on 19/05/2020

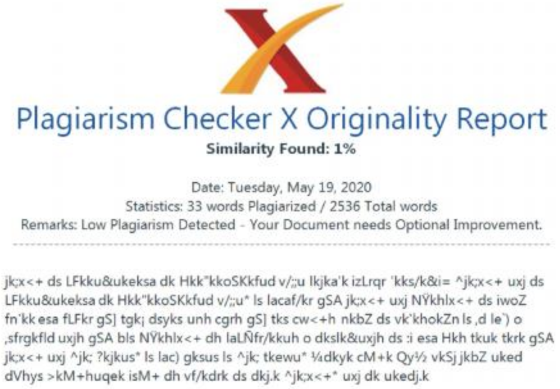

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, May 19, 2020
Statistics: 33 words Plagiarized / 2536 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

jk;x<+ ds LFkku&ukeksa dk Hkk"kkoSKkfud v/;;u lkjka'k izLrqr 'kks/k&i= ^jk;x<+ uxj ds LFkku&ukeksa dk Hkk"kkoSKkfud v/;;u* ls lacaf/kr gSA jk;x<+ uxj NÿkhIx<+ ds iwoZ fn'kk esa fLFkr gS] tgk¡ dsyks unh cgrh gS] tks cw<+h nkbZ ds vk'khokZn ls ,d le`) o ,sfrgkfld uxjh gSA bls NŸkhIx<+ dh laLÑfr/kkuh o dkslk&uxjh ds :i esa Hkh tkuk tkrk gSA jk;x<+ uxj ^jk; ?kjkus* ls lac) gksus ls ^jk; tkewu* ¼dkyk cM+k Qy½ vkSj jkbZ uked dVhys >kM+huqek isM+ dh vf/kdrk ds dkj.k ^jk;x<+* uxj dk ukedj.k

शोध सारांश :–

प्रस्तुत शोध–पत्र **'रायगढ़ नगर के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन'** से संबंधित है। रायगढ़ नगर छत्तीसगढ़ के पूर्व दिशा में स्थित है, जहाँ केलो नदी बहती है, जो बूढ़ी दाई के आशीर्वाद से एक समृद्ध व ऐतिहासिक नगरी है। इसे छत्तीसगढ़ की संस्कृतिधानी व कोसा–नगरी के रूप में भी जाना जाता है। रायगढ़ नगर 'राय घराने' से संबद्ध होने से 'राय जामून' (काला बड़ा फल) और राई नामक कटीले झाड़ीनुमा पेड़ की अधिकता के कारण 'रायगढ़' नगर का नामकरण किया गया। रायगढ़ नगर के अंतर्गत स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन धर्म, समाज, इतिहास और भौगोलिक स्थिति के अनुसार नामकरण किया गया है, जिससे अनेक तथ्यों का उद्घाटन होता है, जो भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द :–

रायगढ़, भाषावैज्ञानिक अध्ययन, इतिहास, कोसा–नगरी।

प्रस्तावना :–

छत्तीसगढ़ के पूर्व दिशा में प्रसिद्ध नदी कैलो के तट पर बसा रायगढ़ नगर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक राजधानी है, जिसे –'कोसा–नगरी' के रूप में भी पहचाना जाता है। रायगढ़ नगरी सेठ किरोड़ीमल की कर्मभूमि तथा संगीत सम्राट राजा चक्रधरसिंह की जन्मभूमि है। छत्तीसगढ़ का एकमात्र जूट मील, जिंदल पॉवर प्लांट का औद्योगिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। आदि–शक्ति माँ बूढ़ी दाई के आशीर्वाद से स्थापित रायगढ़ नगर है, जो 18.26′ वर्ग कि.मी. तक में फैला हुआ है तथा 21.55′ उत्तरी

अक्षांश एवं 83.21′ पूर्व देशांतर पर स्थिति है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 237.10 मीटर है। रायगढ़ नगर के अंतर्गत 50 वार्ड पाए जाते हैं। रायगढ़ नगर लोक–सभा, विधान–सभा तथा नगरपालिका निगम एवं जिला मुख्यालय है। रायगढ़ नगर राजधानी रायपुर से 243 कि.मी. पर राष्ट्रीय राजमार्ग 200 तथा मुम्बई–हावड़ा रेल्वे लाइन पर स्थित है। रायगढ़ नगर अपने साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, औद्योगिक तथा षैक्षिक व भौगोलिक स्थितियों के लिए प्रसिद्ध है।

रायगढ़ नगर का नामकरण :–

रायगढ़ नगर का नामकरण विभिन्न मान्यताओं पर आधारित है। प्रथम मान्यतानुसार ''रायगढ़ 'राय' अर्थात् राय जामून (जो काले रंग का स्वादिष्ट फल है) और गढ़ अर्थात् वह स्थान इसकी मात्रा अधिक हो। अतः 'राय जामुन' की अधिकता से रायगढ़ नामकरण किया गया है।''[1] डॉ. रामकुमार बेहार जी के अनुसार ''रायगढ़ का नामकरण 'राई' नामक कंटीले झाड़ीनुमा पेड़ की अधिकता से रायगढ़ का नाम पड़ा है।''[2] जबकि भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि ''राय शब्द राऊ का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ राजा होता है, जैसे 'राऊत राय' अर्थात् रावतों का राजा। अतः रायगढ़ का नामकरण राजघराने से संबद्ध होने से उपयुक्त जान पड़ता है।''[3]

रायगढ़ नगर के स्थान–नामों का आधार :–

नामकरण की परम्परा भारतवर्ष में अति प्राचीन समय से चला आ रहा है। ''संसार में असत्य प्राणियों व अप्राणियों में अंतर प्रकट करने के लिए नामकरण की आवश्यकता है। नामकरण के द्वारा किसी भी परिचित–अपरिचित स्थान का जीता–जागता चित्र नेत्रों के सम्मुख आ जाता है।''[4] बिना नाम के रूप की कल्पना करना असंभव है। आचार्य पाणिनि ने नामकरण की आवश्यकता पर बल देते हुए लिखा है :–

1. जो वस्तु जिस स्थान में होती है, उस वस्तु के नाम से उस स्थान का नाम पड़ जाता है।
2. किसी वर्ग या समूह के रहने वालों से संबंधित स्थान का नाम पड़ जाता है।
3. बसाने वाले के नाम पर शहर या गाँव का नाम रखना एक स्वाभाविक और पुरानी प्रथा है।
4. जो स्थान किसी दूसरे के निकट बसा हुआ है, वह भी उसके नाम से पुकारा जाता है।[5]

अतः उपर्युक्त संदर्भों को विवेचन करने से यह भली–भाँति स्पष्ट हो जाता है कि स्थान–नामों का लोक–संस्कृति, लोक–जीवन से गहरा संबंध है। रायगढ़ नगर के स्थान–नामों पर इसका प्रभाव परिलक्षित होता है। अतः विवेचन की सुविधा के दृष्टिकोण से निम्नलिखित आधार हो सकते हैं।

1. धर्म पर आधारित स्थान–नाम :–

मनुष्य अपने सुख–दुःख के क्षणों में धर्म से ही अपनी भावना व्यक्त करता है। धर्म भारतीय संस्कृति का परिचायक है। ''धर्म तथा दर्शन प्रत्येक जाति और देश की संस्कृति के अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग रहे हैं।''[6] रायगढ़ नगर में धर्म पर आधारित स्थान–नामों का पाया जाना मनुष्यों के धर्म के प्रति घनिष्ठता को दर्शाता है, जैसे :–

- हिंदू धर्म के देवी–देवताओं पर आधारित स्थान नाम : हिंदू धर्म को सनातन धर्म भी कहा जाता है। हिंदू धर्म में देवी–देवाताओं का विशेष महत्व है। भारतीय दर्शन में 33 करोड़ देवी–देवताओं की कल्पना की गई है, जो हमारे आस्था व श्रद्धा का केंद्र हैं, यथा– भगवानपुर (वार्ड 44)।
- देवियों पर आधारित स्थान–नाम : भारतीय दर्शन में देवी को शक्तिस्वरूपा, आदिशक्ति, जगत–जननी इत्यादि नाम से जाना जाता है– शीतला माता मंदिर (वार्ड 16), सतामाई (वार्ड 14), दुर्गा चौक (वार्ड 36), सम्लेश्वरी मंदिर (वार्ड 7), संतोषी मंदिर (वार्ड 36), सरस्वती चौक (वार्ड 9, 16), गायत्री मंदिर (वार्ड 18), जगदम्बा आश्रम (वार्ड 23), संतोषी नगर (वार्ड 7), सत्तीगुड़ी चौक (वार्ड 14, 16), सावित्री नगर (वार्ड 40), बूढ़ीमाई मंदिर (वार्ड 18) जिन्हें रायगढ़हिन माता के रूप में भी पूजा जाता है, जो रायगढ़ की आदि देवी मानी जाती हैं।

- देवताओं पर आधारित स्थान–नाम : हमारे भारतीय दर्शन में देवताओं को पिता, प्रभु, स्वामी, भगवान, ईश्वर आदि नामों से पुकारते हैं, जो हमारे शुभचिंतक के समान सदैव ध्यान में रहते हैं। देवताओं पर आधारित स्थान–नाम निम्नलिखित हें– श्रीराम मंदिर (वार्ड 9), रामगुड़ी पारा (वार्ड 19), भरतकूम कुआ, शिवमंदिर (वार्ड 16), कृष्णानगर (वार्ड 36), महावीर चौक (वार्ड 14), हनुमान मंदिर (वार्ड 7, 14, 16), बजरंग मंदिर (वार्ड 2, 14, 36), पंचमुखी हनुमान मंदिर (वार्ड 18), बजरंग चौक (वार्ड 14), शनि मंदिर (वार्ड 19), सहदेवपाली (वार्ड 41), गजाननपुरम कॉलोनी (वार्ड 40) आदि।
- देवी और देवता पर आधारित स्थान–नाम : गौरीशंकर मंदिर (रायगढ़ का प्रसिद्ध मंदिर, वार्ड 20), राधाकृष्ण मंदिर (प्रणामी मंदिर, वार्ड 40)।
- अन्य धर्मों पर आधारित स्थान–नाम : गौतम बुद्ध रोड (वार्ड 30), जामा मस्जिद (वार्ड 21), मुस्लिम मोहल्ला (वार्ड 9), ईसानगर (वार्ड 4), सेंट माइकेल चर्च (वार्ड 13), विश्वासगढ़ चर्च (वार्ड 31), गुरूद्वारा (वार्ड 18)।

2. सिद्ध–साधकों पर आधारित स्थान–नाम :–

भारत देश धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ 'कण–कण में भगवान' के दर्शन को स्वीकारा जाता है, इसीलिए यह पवित्र भारत देश विश्व का जगत गुरु कहलाने का अधिकार रखता है। ''इस पावन भूमि पर समाज को दिशा दिखाने वाले अनेक सिद्ध साधकों का जन्म हुआ है, जिनका मानव–समाज में विशेष प्रभाव है। संत–साधुओं के अमृत–वचन जन–जन के प्रेरक और मार्ग–दर्शक सिद्ध हुए हैं।''[7] प्रमाणस्वरूप स्थान–नामों का नामकरण किया जाता है, जैसे :– संतकबीर दास – कबीर चौक (वार्ड 35), कबीर चौराहा (वार्ड 33), संत गुरु घासीदास– गुरू घासीदास नगर (वार्ड 36), गुरु घासीदास जयस्तंभ (वार्ड 3), ऋषि चौक (वार्ड 30), जोगीदीपा (वार्ड 8)।

3. सामाजिक स्थिति पर आधारित स्थान–नाम :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के बिना जीवित नहीं रह सकता है। समाज के अंतर्गत अनेक जाति–व्यवसाय के लोग रहते हैं। प्राचीनकाल में भारतीय हिंदू धर्म में समाज के सफल संचालन हेतु चार वर्णों में बाँटा गया था, जो अपने कर्मों के अनुसार कार्य करते थे, जैसे प्रथम ब्राह्मण (शिक्षा संबंधित कार्य), द्वितीय क्षत्रिय (सुरक्षा एवं युद्ध से संबंधित कार्य), तृतीय वैश्य (व्यापार से संबंधित कार्य) तथा अंतिम वर्ग शूद्र (ये तीनों की सेवा में संलग्न रहता था), परंतु धीरे–धीरे यही कर्मों से विभाजित वर्ग जातियों में परिणित हो गया। अतः रायगढ़ नगर में सामाजिक स्थिति से संबंधित स्थान नाम हैं :–

जाति–व्यवसाय से संबंधित स्थान–नाम

जैसे कि पूर्व में जाति के निर्धारण की आवश्यकता प्रकाश डाला गया है, अतः जाति–व्यवसाय से संबंधित स्थान–नाम हैं :–

- सतनामी : सतनामीपारा – कृषि–कार्य (वार्ड 6, 30, 36)
- तेली : तेलीपारा – तेल का कार्य (वार्ड 10)
- यादव : राऊतपारा – गाय चराने का कार्य (वार्ड 13)
- सोनार : सोनारपारा : सोने के आभूषण बनाने का कार्य (वार्ड 21)
- कोष्टा : कोष्टापारा – कपड़ा बुनने व बनाने का कार्य (वार्ड 21, 22, 23)
- धोबी : धोबीपारा – कपड़ा धोने का कार्य (वार्ड 9)
- अघरिया : अघरियापारा – सब्जी उत्पादन का कार्य (वार्ड 17)
- कहरा : कहरागली – मछली पकड़ने का कार्य (वार्ड 14)
- देवार : देवारपारा – नाच–गाकर बंजारे जैसा कार्य (वार्ड 32)

- घसिया : घसियापारा – घास के कार्य करने वाले (वार्ड 32)
- गाड़ा : गाड़ापारा – बाजा बजाने का कार्य (वार्ड 15)
- धांगर : धांगरडीपा – आदिवासी, कृषि–कार्य (वार्ड 2)
- बंगाली : बंगालीपारा – बंगाल के रहने वाले (वार्ड 14, 17, 25, 27)
- सिंधी : सिंधी कॉलोनी : व्यापार का कार्य (वार्ड 25)
- अग्रवाल : अग्रवाल पारा – वैश्य व्यापार का कार्य (वार्ड 19, 20)
- कुम्हार : कुम्हारपारा – मिट्टी के बर्तन बनाना (वार्ड 6)
- कसेर : कसारपारा – कांसे के बर्तन बनाना (वार्ड 26)

सामाजिक व्यक्तित्व पर आधारित स्थान–नाम :–

सेठ किरोड़ीमल : आधुनिक रायगढ़ के शिल्पी सेठ किरोड़ीमल का जन्म 15 फरवरी 1892 को लुहारीजाटू भिवानी (हरियाणा) और निर्वाण 1 नवंबर 1965 को रायगढ़ में हुआ। सेठ जी के शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग से लेकर सामाजिक क्षेत्रों में योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। इनके इन्हीं कार्यों को चिरस्थायी बनाने हेतु कई स्थानों का नाम इनके नाम पर रखा गया है, जैसे– किरोड़ीमल महाविद्यालय, किरोड़ीमल पॉलिटेक्नीक कॉलेज, किरोड़ीमल जिला चिकित्सालय, किरोड़ीमल इंजीनियरिंग कॉलेज, आदि।

4. इतिहास पर आधारित स्थान–नाम :–

रायगढ़ नगर के इतिहास का भारतीय इतिहास पर भी प्रभाव पड़ा है। भले ही ''रायगढ़ नगर का प्रारंभिक इतिहास अंधकारपूर्ण है, परंतु परम्परागत सूचनाओं के अनुसार रायगढ़ का राजवंश चाँदा के प्राचीन गोड़ राजवंश से संबंध रखता है। रायगढ़ को संगठित करने वाले को रायगढ़ के संस्थापक श्री मदनसिंह जी को माना जाता है, जो कि चांदा जिले के गाँव बैरागढ़ से आए थे।''[8] मदनसिंह के पश्चात् तख्तसिंह, बेठसिंह, दिलीप सिंह, जुहारसिंह, देवनाथ सिंह, भूपदेव सिंह, नटवर सिंह, चक्रधर सिंह राजाओं ने रायगढ़ पर राज्य किया, जिसमें से सभी ने अपने–अपने समय में अनेकों प्रसिद्ध कार्य किए, परंतु राजा चक्रधर सिंह जैसा प्रतिभा संपन्न, कलाप्रिय, संगीत सम्राट अन्य नहीं हुए। राजा चक्रधरसिंह रायगढ़ के इतिहास की धूरी हैं। अतः रायगढ़ के स्थान–नामों में राजघराने से संबंधित इतिहास ही रायगढ़ की इतिहासिकता का परिचायक है, क्योंकि स्वाभाविक और पुरानी प्रथा को ही ऐतिहासिक आधार का मूल माना जाता है। इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण नाम जनता की स्मृति में रहते हैं। इस नगर में इतिहास से संबंधित स्थान–नाम पाए जाते हैं, जैसे– मोतीमजल (वार्ड 7) राजा भूपदेव सिंह अपने पुत्र राजा चक्रधर सिंह के जन्म के अवसर पर निर्माण कराए थे। भूपदेव गंज (वार्ड 20) रायगढ़ के राजा भूपदेव भी संगीत के मर्मज्ञ थे। चक्रधर चौक (वार्ड 25) राजा चक्रधर सिंह संगीत सम्राट के रूप में जाने जाते हैं। नटवर हाईस्कूल (वार्ड 19) राजा भूपदेव के प्रथम पुत्र तथा राजा चक्रधरसिंह के बड़े भाई।

भारतीय परिदृश्य में ऐतिहासिक पात्रों को भूला पाना असंभव है, जिनके अथक प्रयासों से ही हमारा देश आजाद हुआ है, जिनके प्रति स्नेह व प्रेम का प्रतीक स्वरूप स्थान–नामों का नामकरण किया जाता है।

- डॉ. अम्बेडकर नगर (वार्ड 30) भारतीय संविधान के निर्माता व दलितों के मसीहा के रूप में जाने जाते हैं, भारत के प्रथम कानून मंत्री भी रहे।
- महात्मा गाँधी चौक (वार्ड 19) भारत के राष्ट्रपिता के रूप में पूजे जाने वाले सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे।
- सुभाषचंद्र बोस चौक (वार्ड 18) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी नेता, इनकी मृत्यु आज भी रहस्य है।

- जवाहरलाल नेहरू नगर (वार्ड 4) स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री।
- इंदिरा नगर (वार्ड 5) भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री।
- राजीव गाँधी चौक (वार्ड 1) भारत के प्रधानमंत्री, संचार प्रौघोगिकी के जन्मदाता।
- कारगील चौक (वार्ड 18) भारत–पाक युद्ध के दौरान हमारे लाखों जवान शहीद हुए उस स्थान व मिशन को कारगील कजा जाता है। उन शहीदों की याद में स्थापित कारगील चौक।
- दीवानपारा (वार्ड 16) कल्चुरियों के षासनकाल का विषिश्ट पद दीवान है।

ऐतिहासिक व्यक्तित्व

राजा चक्रधर सिंह : रायगढ़ के 10वें क्रम के राजा चक्रधर सिंह का जन्म 19 अगस्त 1905 को रायगढ़ में भूपदेव सिंह के द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ। ये अपने पिता के समान संगीतज्ञ थे। इन्हें 'संगीत सम्राट' के रूप में माना जाता है। इनके जन्म–दिवस पर 'चक्रधर समारोह' के रूप में मनाया जाता है। इनका देहावसान 7 अक्टूबर 1947 को हुआ। इनके प्रति सम्मान–स्वरूप स्थान–नामों का नामकरण किया गयाहै, जैसे– चक्रधर नगर (वार्ड 25, 27, 28), चक्रधर चौक (वार्ड 25, 29, 32)।

5. भौगोलिक स्थिति पर आधारित स्थान–नाम :–

भौगोलिक स्थितियों का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसमें रंग–रूप, रहन–सहन, खान–पान से लेकर संस्कृतियों के अंतर को देखा जाता है। भौगोलिक स्थिति ही मानव को अपनी सभ्यता के विकास के लिए परिवेश प्रदान करती है। भौगोलिक स्थिति के अंतर्गत स्थान–नाम निम्नानुसार हैं–

5.1. आवास–बोधक स्थान–नाम : मनुष्य आदिकाल से कंदराओं में निवास करता था, धीरे–धीरे झोपड़ी से लेकर महल, बंगले बनाकर रहने लगा है, यह मानव–जीति की विकास–गाथा है। वर्तमान परिदृश्य में भी आवास का विशेष महत्व है। अतः स्थान–नामों का पाया जाना इसकी आवश्यकता तथा महत्व का परिचय के लिए पर्याप्त है, जैसे– झोपड़ीपारा (वार्ड 35), अटल आवास (वार्ड 27), मंगल भवन (वार्ड 4), बुंजीभवन (वार्ड 18), अतिथि लाज (वार्ड 16), राधिका लाज (वार्ड 16), रिलेक्स लाज (वार्ड 32), जगदम्बा आश्रम (वार्ड 23), बंगलापारा (वार्ड 25), मोती महल (वार्ड 7)।

5.2. भूमि वैशिष्ट्य से संबंधित स्थान–नाम : जमीन का आकार–प्रकार में अंतर होता है, जिसका प्रभाव हमारे ऊपर सीधा पड़ता है, जिससे नामकरण में कोई विशेष परेशानी नहीं होती है। रायगढ़ नगर में स्थान–नाम– डीपा (ऊँचा स्थान) : धंगरडीपा (वार्ड 2), डीपापारा (वार्ड 34), रामलीला मैदान (वार्ड 13), संजय मैदान (वार्ड 2), चांदभारी मैदान (वार्ड 6)।

6. वनस्पतियों से संबंधित स्थान–नाम :–

भौगोलिक स्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों में वनस्पति मुख्य है। अतः इनसे प्रचलित स्थान–नाम निम्नानुसार हैं– वन : मधुबन पारा (वार्ड 7), पार्क : कमला नेहरू पार्क (वार्ड 26), सरायीपाली (वार्ड 45), बोईरदादर (वार्ड 50), अमलीभौना (वार्ड 49), रीपापार (वार्ड 6), बेलादुला (वार्ड 24)।

7. पशु–पक्षियों पर आधारित स्थान–नाम :–

प्राचीनकाल से ही मानव के साथी के रूप में पशु–पक्षी साथ रहे। इस कारण ''पशु–पक्षियों से संबंधित स्मृतियों को अमर रखने की दृष्टि से भी ग्राम–नाम संबोधित हुए'' [9], जैसे– गौशाला पारा (वार्ड 13), भैंसाकोण मोहला (वार्ड 26), मिट्ठूभुड़ा (वार्ड 36)।

8. जल–स्रोतों पर आधारित स्थान–नाम :–

समस्त प्राणी के लिए जन जीवनदायी है। बिना इसके जीवन की कल्पना करना व्यर्थ है। इसीलिए तो कहा गया है– 'जल ही जीवन है' । मानव सभ्यता का इतिहास जल अर्थात् नदी, समुद्र के पास से

ही प्राप्त की गई है। अतः हमारे दैनिक उपयोग के लिए जल अत्यंत उपयोगी है। रायगढ़ नगर में जल–स्रोतों पर आधारित स्थान–नाम हैं– केलो नदी (वार्ड 23), लालपानी टंकी (वार्ड 11), करबला तालाब (वार्ड 15), वाघ तालाब (वार्ड 7), भूगवाधान तालाब (वार्ड 1), पेड्डुबरी (वार्ड 17), जगतपुर तालाब (वार्ड 4), पूछापारा तालाब (वार्ड 7, 8), सोनूमुड़ा तालाब (वार्ड 38), शंकर मंदिर तालाब (वार्ड 3)।

निष्कर्ष :–

'रायगढ़ नगर के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन' के अंतर्गत स्थान–नामों में भाषागत प्रभावों को देखा जा सकता है, जो नामकरण अध्ययन के द्वारा परिलक्षित होता है। रायगढ़ नगर एक ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं औद्योगिक नगर है। यह नगर अनेक संभावनाओं से परिपूर्ण है। उक्त शोध से आने वाली पीढ़ी को अनेक प्राचीन व नवीन तथ्यों से संबंधित जानकारी प्राप्त हो सकती है। अतः आने वाले दिनों में रायगढ़ नगर और अधिक उन्नति की ओर अपनी अलग छवि स्थापित करेगा।

संदर्भ सूची :–

1. बलदेव, रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव, रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2008, पृ. 9।
2. बलदेव, रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव, रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2008, पृ. 9।
3. बलदेव, रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव, रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2008, पृ. 9।
4. अग्रवाल, सरयू प्रसाद, अवध के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन लखनऊ : विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन, 1973, पृ. 44–45।
5. अग्रवाल, सरयू प्रसाद, अवध के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन लखनऊ : विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन, 1973, पृ. 45।
6. अग्रवाल, सरयू प्रसाद, अवध के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन लखनऊ : विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन, 1973, पृ. 50।
7. पाठक विनय कुमार, छत्तीसगढ़ के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. दिल्ली : भावना प्रकाशन, पृ. 36।
8. गुप्त प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़. रायपुर : पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, 1973, पृ. 251।
9. कामिनी. बुंदेली भाषा के स्थान अभिधानों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन, कानपुर : आराधना ब्रदर्स, 1985, पृ. 53।

****